रात्रि क्लास 9/1/69 ओम शान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चों को पहले–2 समझानी देनी है बाप की। बेहद का बाप ही इसको पढ़ाते हैं और जो गीता वाले हैं खास उनको पकड़ना अच्छा रहता है। वह कृष्ण को भगवान कहते हैं। समझाना है भगवान तो निराकार को कहा जाता है। देहधारी तो बहुत हैं। बिगर देह है ही एक। श्रीकृष्ण भगवान है नहीं। ऊंच ते ऊंच शिवबाबा है। यह अच्छी रीत बुद्धि में बिठाओ। वरसा बेहद के बाप से मिलता है जो ऊंच ते ऊंच है। वह है ही निराकार परमपिता परमात्मा। वह है बेहद का बाप और यह है हद का बाप। बेहद के बाप से बेहद का वरसा मिलता है। गायन भी है और कोई 21 जन्मों का वरसा देते नहीं हैं। ऐसा भी कोई बाप नहीं जिससे अमर पद मिले। अमरलोक है सतयुग। यह है मृत्युलोक। तो बाप का परिचय देने से समझेंगे तो बाप से वरसा भी मिलता है। जिसको दैवी स्वराज्य कहा जाता है। वह बाप ही देते हैं। वही पतित–पावन गाया जाता है। वह कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो पाप कट जावेंगे। पतित से पावन बन पावन दुनियां में चलने लायक बन सकते हो। कल्प2 बाप कहते हैं मामेकं याद करो। याद की यात्रा से ही पवित्र बनना है। अभी पावन दुनियां आ रही है। पतित दुनियां विनाश होनी है। पहले2 बाप का परियच दे पक्का कराना है। जब पक्का बाप को समझ जायें तब समझें बाप से वरसा मिलता है। इसमें माया भुलाती बहुत है। तुम कोशिश करते हो बाबा को याद करने की फिर भूल जाते हो। शिवबाबा को याद करने से ही पाप कटेंगे। इन द्वारा बताते हैं मुझे याद करो। फिर भी धंधे आदि में भूल जाते हैं। यह भूलना न चाहिए। यही मेहनत की बात है। माया रावण भुला देती है। बाप को याद करने से ही पाप कटेंगे। इसका भी समय है कितने समय में बाप को याद करते2 कर्मातीत अवस्था को पहुंचना है। कर्मातीत अवस्था वाले को कहा जाता है फरिश्ते। तो यह पक्का याद करो कैसे, किसको समझावें। पक्का निश्चय भी हो (जाये) ..... (भाईयों को समझाते हैं। बाप का) पैगाम देना है। कहते हैं ..... पास चलूं। दीदार करूं। यह तो कायदे के विरूद्ध है। रांग हो जाता। दीदार आदि की तो बात ही नहीं। भगवान आकर सिखलाते हैं और मुख से कहते हैं तुम मुझ अपने निराकार बाप को याद करो। याद करने से ही पाप सभी कट जावेंगे। कहां भी धंधे आदि में बैठे घड़ी2 बाप को याद करना है। बाप ने हुकुम दिया है मुझे याद करो। निरन्तर याद करने वाले ही विन करेंगे। याद न करेंगे तो मार्क्स कम हो जावेंगे। यह पढ़ाई सिवाय बाप के कोई जानते नहीं। याद से ही पाप कटेंगे, नहीं तो देवता बन नहीं सकेंगे। जो अच्छी रीत सुनते हैं वह सामने चैन से मालूम पड़ जाता है। चक्र को भी याद करना है बाप को याद करना है। चक्रवर्ती राजा बनना है। 84 जन्मों को भी याद करना है। बच्चों को समझाया गया तुम 84 का चक्र कैसे फेरते हो। अपने आप से ही माथा मारना होता है। अभी तुम बाप के रहे पड़े हो। जरूर निश्चय है तब तो रहे पड़े हो ना। फिर भी माया कहां न कहां पकड़ कर गिरा देती है। कर्मातीत अवस्था को पहुंचने मेहनत करनी है। वह अन्त में होनी है। अन्त कोई भी समझ आ सकती है। इसलिये पुरूषार्थ लगा रहना चाहिए। नित्य तुम्हारा पुरू0 चलता रहे। तुमको यह निश्चय करना है बेहद के बाबा से हमको याद की यात्रा से बेहद का वरसा लेना है। इसमें ही माया विघ्न डालती है। सारा दिन भुला देती है। ऐसे होना न चाहिए। याद करने में थकावट नहीं होती है। सिर्फ़ बुद्धि में याद रखना है। बाप के बच्चे हैं। यह सबक है। इनको भूलने से बहुत घाटा पड़ जाता है। बेहद के बाप से बार बार वर अर्थात् वरसा मिलता है। फिर भूलने का भी ड्रामा में पार्ट है। बाप के सम्मुख रहने से बाप को भूलना न चाहिए। जबकि बाप कहते हैं मुझे याद करो। लौकिक बाप नहीं कहते हैं। वह ऐसे नहीं कहेंगे देह के सभी सम्बन्ध छोड़ अपन को आत्मा समझो। शरीर का भान छोड़ मुझे याद करो तो पाप कटेंगे। एक की याद से ही पाप कटेंगे। तुम सतोप्रधान बनते जाते हो अर्थात् पाप कटते जाते हैं। यह धंधा तो खुशी से करना चाहिए ना। बाप को याद करने से पाप कट जावेंगे। यह गीता में भी है; परंतु किसकी बुद्धि में ठहरता ही नहीं। ब्राह्मण ही देवता बनते हैं। भोजन खाने समय बाप को याद करना है। इसलिये भोजन की इतनी महिमा है जो फिर भक्ति मार्ग में चलता रहता है। यहां तो बाप कहते हैं सभी को भूल एक बाप को याद करना है। यह गुप्त अभ्यास तुम बच्चों का चलता रहे तो अच्छा है। तुम्हारा ही कल्याण है। अपन को देखना है बाबा को याद करता हूं। याद की खबरदारी चाहिए।

पुरूष बनते हो। इसको संगमयुग कहा जाता है। वह कलियुग। तो इसमें संशय न आना चाहिए। अगर आता है तो कुछ न कुछ नुक़सान कर देते हैं। कोई भी संशय पड़े तो बताना चाहिए। मेहनत है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना। आधा कल्प रावण के बने हो। अभी बनते हो राम के। बाप कहते हैं कितने भी तूफान आये फिर भी बाप को याद करना है जरूरी है। यह है रावण राज्य, यह है रामराज्य। चढ़ती कला और उतरती कला। बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। समझाना चाहिए ना इस समय सभी आत्माएँ तमोप्रधान हैं। सतयुग में सभी सतोप्रधान होते हैं। बाप बच्चों को ही कहते हैं। जिन्होंने भक्ति में धक्के खाये हैं। उसमें भी कितने खुश रहते हैं। मीरा डांस करती थी। यहां तो ढेर करते हैं। बाबा तो बंद करा देते कोई उससे फायदा नहीं। आदत को मिटा देना चाहिए। इनको अव्यक्त घूमना–फिरना कहा जाता है। यह है पढ़ाई और याद। याद भी एक्युरेट चाहिए। बाप को याद करना सहज है। समझाने में भी सहज है; परन्तु अपन को आत्मा समझना घड़ी2 भूल जाते हो। यह भी ड्रामा में नूंध है। सृष्टि का चक्र तो बुद्धि में है ना। ड्युरेशन को लम्बा कर दिया है। भक्ति मार्ग के हैं गपोड़े बहुत। धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट, धन भ्रष्ट हो पड़े हैं। बन्दरों कुतरों बिच्छूओं माफिक बच्चे पैदा करते रहते हैं। पेट चीर कर बच्चा निकालते हैं। ईज़ी कर दिया है। यह भी कामी पुरूषों की युक्ति है। क्या2 करते हैं। हार्ट निकाल कर दूसरा डालते उसमें रखा ही क्या है। यह तो पुरानी दुनियां ही खलास होनी है। जब कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तब ही विनाश शुरू होगा। आगे चल तुम सा0 भी बहुत करेंगे। सुनेंगे भी। समझाने की बड़ी युक्ति होती है। कोई तो जैसे समझते ही नहीं। जो किसको समझा सकते हैं तो जैसे कि यहां फालतू हैं। यहां बच्चे आते हैं रिफ्रेश होने लिए। थोड़ा टाइम रहे यह गये। कोई2 मकान आदि बनाते हैं तो उनको .....ाया जाता है इस समय सभी तरफ़ झगड़ा ही झगड़ा है। मौत खड़ा है। समय बड़ा नाजुक है। स्टूडेन्ट्स भी बिगड़ते हैं। इससे ही फिर सिविल वॉर हो जावेगी। बाप ने समझाया है बरोबर कलियुग में तमोप्रधान है वहां सुख थोड़े ही है। लोड़ा आया यह मकान गिरा। नया मकान बनाते हैं आराम में रहने लिए। अभी बच्चे जानते थे स्वर्ग था। अभी नर्क है। इनको ड्रामा ही कहेंगे ना। यह तो कॉमन बात है। कोई भी समझते यह सृष्टि का चक्र है। तुम्हारा नाम ही है स्वदर्शन चक्रधारी। बाप ने सारी रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान दिया है। बाप कहते हैं तुम नहीं जानते हो। मैं तुम बच्चों को समझाता हूँ। है बहुत सहज। सात रोज अखण्ड पाठ आदि रखते हैं। समझू जो होते हैं वह झट समझ जाते हैं। बहुत ईज़ी है। सात रोज में अच्छी रीत पढ़ टीचर बन सकते हैं। बाप का परिचय देना है। बाप ने समझाया है देखो अच्छा समझते हैं तो पहले भक्ति की है। वह आवेंगे भी नहीं। आगे चल कर हरेक की बात से, चलन आदि से झट पता पड़ जावेगा। यह पुराना भक्त है या नहीं। यह ज्ञान की प्रवृत्ति मार्ग का है। निवृत्ति मार्ग वाले ज्ञान दे न सके। बाप कहते हैं इस समय तक जो पास हुआ वह ड्रामा है। बाप ने समझाया है हम सभी एक्टर्स हैं। वह आसुरी सम्प्रदाय ..... नहीं है। यह ग्लानि की बात नहीं। समझा जाता है। रचना के आदि,मध्य,अन्त का राज़ बच्चों को ही सुनाते हैं। बाप समझाते हैं देवताओं आदि सभी की कितनी निन्दा कर दी है। कोई निन्दा करते हैं तो उन पर डिमेन्मेशन(डिफेमेशन) का केस चलता है। बाप कहते हैं तुमने भी निन्दा की है तो देखो तुम्हारी क्या हालत हो गई है। धर्मराज ने दन्ड दिया है। समय भी बहुत थोड़ा है। बहुत वेद–शास्त्र पढ़े हुये भी आते हैं। फिर समझते हैं यह भी भूसा है। इससे तुम्हारी दुर्गति हुई है। अभी यह ट्रां ट्रां बन्द करो। पढ़ने से ही दुर्गति हुई है। फिर महिमा किसकी करते हो। अच्छा, मीठे मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।